

भारत में हिन्दी पत्रकारिता का विकास

प्रो रश्मि कुमार

हिंदी और आधुनिक भारतीय भाषा विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

ABSTRACT

आजादी से पूर्व की पत्रकारिता समाजिक सरोकारों से जुड़ी थी। भारतीयों के सामाजिक,धार्मिक,राजनीतिक,आर्थिक हितों का समर्थन किया। समाज मे व्याप्त अंधविश्वास और कुरीतियों पर प्रहार किए और पत्रों के माध्यम से जागरूकता पैदा की।हिन्दी पत्रकारिता की कहानी भारतीय राष्ट्रीयता की कहानी हैं। हिन्दी पत्रकारिता के आदि उन्नायक जातीय चेतना, युगबोध और अपने महत्ति दायित्व के प्रति पूर्ण सचेत थे। कदाचित इसलिए विदेशी सरकार की दमन –नीति का उन्हें शिकार होना पड़ा था, उसके नृंशस व्यवहार की यातना झेलनी पडी थी।उन्नीसवी शताब्दी में हिन्दी गद्य–निर्माण की चेष्ठा और हिन्दी प्रचार आन्दोलन अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थितियों में भयंकर कठिनाइयों का सामना करते हुए कितना तेज और पृष्ठ था इसका साक्ष्य भारतमित्र (सन 1878 ई में) सार सुधानिधि (सन 1879 ई में) और उचित वक्ता (सन 1880 ई में) जीर्ण पृष्ठों पर मुखर हैं। उन दिनों सरकारी सहयता के बिना किसी भी पत्र का चलन असंभव था।कंपनी सरकार ने मिशनरियों के पत्र को डाक आदि की सुविधा दे रखी थी, परन्तु चेष्ठा करने पर भी ''उदंत मार्तड़'' को यह सुविधा प्राप्त नहीं हो सकी। हिन्दी पत्रकारिता का पहला चरण 1826 ई. से 1873 ई. तक को हम हिन्दी पत्रकारिता का पहला चरण कह सकते हैं।1873 ई. में. भारतेन्दु ने ''हरिश्चंद मैगजीन'' की स्थापना की। एक वर्ष बाद यह पत्र ''हरिश्चंद चंद्रिका'' नाम से प्रसिद्ध हुआ। वैसे भारतेन्दु का ''कविवचन सुधा'' पत्र 1867 में ही सामने आ गया था और उसने पत्रकारिता के विकास में महत्वपूर्ण भाग लिया था।

KEYWORDS: पत्रकारिता, हिन्दी, प्रचार, आन्दोलन, परिस्थितियों

विषय प्रवेश

भारतीय पत्रकारिता का आरंभ कलकत्ता से माना जाता है। यह वह समय था जब अंग्रेजी भाषा का ज्ञान होना और उसे अपनाया जाना आधुनिकता की पहचान के लिए जरूरी समझा जाता था। भारत में इस आधुनिकता तथा नवजागरण का नेतृत्व राजा राममोहन राय ने किया जो एक समाज सुधारक तथा प्रगतिवादी दृष्टिकोण वाले व्यक्ति थे। वे अरबी, संस्कृत, फारसी आदि भाषाओं के अच्छे ज्ञाता थे और अंग्रेजी में भी दिलचस्पी रखते थे। इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण परमहंस, रवींन्द्रनाथ टैगोर व अरविंद घोष आदि ने तत्कालीन भारतीय जन–जीवन में आध्यात्मिकता तथा मानवीयता का प्रसार किया।1826 में पहला हिंदी साप्ताहिक समाचार पत्र ''उदन्तमर्तण्ड'' का प्रकाशन किया गया था। इस समाचार पत्र का प्रकाशन जुगल किशोर शुक्ल ने कोलकाता के बड़े बाजार इलाके में अमरतल्ला लेन, कोलूटोला से प्रारम्भ किया था। इस दिन को पत्रकारिता के क्षेत्र में पत्रकारिता दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसके सम्पादक भी वह स्वयं थे।हिंदी पत्रकारिता को शुरू करने की दृष्टि से हिंदी पत्रकारित जगत् में उनका विशेष सम्मान है। कानपुर के रहने वाले वकील जुगल किशोर ने कोलकाता को अपनी कर्मभूमि बनाया। उन्होंने ऐसे समय में हिंदी भाषा में पत्र निकालने का साहस दिखया जब ब्रिटिश शासन में भारतीयों के हित में कुछ भी लिखना बड़ी चुनौती थी। उस समय बंगला,अंग्रेजी,फारसी में निकलने वाले पत्रों के बीच उदन्तमर्तण्ड अकेला हिंदी भाषा का पत्र था जो हर मंगलवार को प्रकाशित हो कर पाठकों तक पहुंचता था।

आजादी से पूर्व की पत्रकारिता समाजिक सरोकारों से जुड़ी थी। भारतीयों के सामाजिक,धार्मिक,राजनीतिक,आर्थिक हितों का समर्थन किया। समाज मे व्याप्त अंधविश्वास और कुरीतियों पर प्रहार किए और पत्रों के माध्यम से जागरूकता पैदा की।हिन्दी पत्रकारिता की कहानी भारतीय राष्ट्रीयता की कहानी हैं। हिन्दी पत्रकारिता के आदि उन्नायक जातीय चेतना, युगबोध और अपने महत्ति दायित्व के प्रति पूर्ण सचेत थे। कदाचित इसलिए विदेशी सरकार की दमन– नीति का उन्हें शिकार होना पड़ा था, उसके नृंशस व्यवहार की यातना झेलनी पडी थी।उन्नीसवी शताब्दी में हिन्दी गद्य–निर्माण की चेष्ठा और हिन्दी प्रचार आन्दोलन अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थितियों में भयंकर कठिनाइयों का सामना करते हुए कितना तेज और पृष्ठ था इसका साक्ष्य भारतमित्र (सन 1878 ई में) सार सुधानिधि (सन 1879 ई में) और उचित वक्ता (सन 1880 ई में) जीर्ण पृष्ठों पर मुखर हैं।

वर्तमान में हिन्दी पत्रकारिता ने अंग्रेजी पत्रकारिता के दबदबे को खत्म कर दिया हैं। पहले देश –विदेश में अंग्रेजी पत्रकारिता का दबदबा था लेकिन आज हिन्दी भाषा का झण्डा चारों और लहरा रहा हैं।भारतवर्ष में आधुनिक ढंग की पत्रकारिता का जन्म अठारहवीं शताब्दी के चतुर्थ चरण में कलकत्ता, बंबई और मद्रास में हुआ। सन 1780 ई में प्रकाशित हिके (भ्पबामल) का ''कलकत्ता गजट'' कदाचित इस ओर पहला प्रयत्न था। हिन्दी के पहले पत्र उदंत मार्तण्ड (1826) के प्रकाशित होने तक इन नगरों की ऐग्लोइंडियन अंग्रेजी पत्रकारिता काफी विकसित हो गई थी। इन अंतिम वर्षो में फारसी भाषा में भी पत्रकारिता का जन्म हो चुका था।

18वीं शताब्दी के फारसी पत्र कदाचित हस्तलिखित पत्र थे। 1801 में हिन्दुस्थान इंटेलिजेंस ओरऐंटल ऐथोलॉजी नाम को जो संकलन प्रकाशित हुआ उसमें उत्तर भारत के कितने ही अखबारों के उद्धरण थे। 1810 में मौलवी इकराम अली ने कलकत्ता से लीथो पत्र ''हिन्दुस्तानी'' प्रकाशित करना आंरभ किया।1816 में गंगाकिशोर भट्टाचार्य ने ''बंगाल गजट'' का प्रवर्तन किया। यह पहला बंगला पत्र था। बाद में श्रीरामपुर के पादरियों ने प्रसिद्ध प्रचारपत्र ''समाचार दर्पण'' को (27 मई 1818) जन्म दिया।न प्रारम्भिक पत्रों के बाद 1823 में हमें बंगला भाषा के ''समाचारचंद्रिका और संवाद कौमुदी'' फारसी उर्दू के जामे जहॉनुमा और शमसुल अखबार तथा गुजराती के मुंबई समाचार दर्शन होते हैं। यह स्पष्ट हैं कि हिंदी पत्रकारिता बहुत बाद की चीज नहीं है।दिल्ली का ''उर्दू अखबार''(1833) और मराठी का ''दिग्दर्शन''(1837) हिन्दी के पहले पत्र ''उदंत मार्तड़'' (1826) के बाद ही आए। ''उदंत मार्तड़'' के संपादक पंडित जुगलकिशोर थे। यह साप्ताहिक पत्र था। पत्र की भाषा पछांही हिंदी रहती थी, जिसे पत्र के संपादकों ने ''मध्यदेशीय भाषा'' कहा हैं। यह पत्र 1827 में बंद हो गया। उन दिनों सरकारी सहयता के बिना किसी भी पत्र का चलन असंभव था।कंपनी सरकार ने मिशनरियों के पत्र को डाक आदि की सुविधा दे रखी थी, परन्तु चेष्ठा करने पर भी ''उदंत मार्तड़'' को यह सुविधा प्राप्त नहीं हो सकी। हिन्दी पत्रकारिता का पहला चरण 1826 ई. से 1873 ई. तक को हम हिन्दी पत्रकारिता का पहला चरण कह सकते हैं।1873 ई. में. भारतेन्दु ने ''हरिश्चंद मैगजीन'' की स्थापना की। एक वर्ष बाद यह पत्र ''हरिश्चंद चंद्रिका'' नाम से प्रसिद्ध हुआ। वैसे भारतेन्दु का ''कविवचन सुधा'' पत्र 1867 में ही सामने आ गया था और उसने पत्रकारिता के विकास में महत्वपूर्ण भाग लिया था।

हिंदी समाचार पत्रों का योगदान पत्रकारिता के दायित्व निर्वाह में विशेष रूप से रहा

है। 'हिंदी साहित्य के इतिहास लेखकों और पत्रकारिता के पंडितों द्वारा यह तथ्य अब सर्वसम्मति से स्वीकार किया जा चुका है कि भारतवर्ष में हिंदी पत्रकारिता का श्रीगणेश सन् 1826 में 'उदन्त मार्तण्ड'' के प्रकाशन से हुआ था। सन् 1831 के पार्लियामेंटरी दस्तावेजों में देशी पत्रों का जो विवरण समाविष्ट किया गया था, उसमें पहली बार 'उदन्त मार्तण्ड' व 'बंगदूत ' नाम के दो हिंदी पत्रों के अस्तित्व का उल्लेख किया गया है। ''उदन्त मार्तण्ड' पत्र के प्रकाशन के साथ 'बंगदूत' नाम के पत्र के प्रकाशन का भी उल्लेख मिलता है। दोनों पत्रों के प्रकाशन का अंतराल लगभग तीन वर्ष है। 'उदन्त मार्तण्ड' सन् 1826 में और 'बंगदूत' सन् 1829 में प्रकाशित होना शुरू हुआ। तत्पश्चात् हिंदी के अन्य पत्र प्रकाशित हुए और उनकी वृद्धि निरंतर होती गई।

भारत में हिंदी पत्रकारिता की शुरूआत करने वाले प्रथम प्त्र 'उदन्त मार्तण्ड' के 79 अंक निकलने के बाद भ्जी जब उसके संपादक को कोई उत्साहजनक परिणाम नहीं मिला तो 4 दिसंबदर, 1927 को यह पत्र निम्न पद्यांश के साथ बंद हो गया–

'आज दिवस लौं उग चुक्यों मार्तण्ड उदन्त
अस्ताचल कों जात हैं, दिनकर दिन अब अन्त।'

भारतीय स्वातंत्रय आंदोलन के पक्ष में जनमत बनाने एंव पत्रकारिता के दायित्व निर्वाह में हिंदी समाचार पत्रों का बड़ा योगदान है। राष्ट्रीय आंदोलन के समय हिंदी के पत्रों का दृष्टिकोण देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत रहा। उस समय की साहसिक पत्रकारिता के अनेक उदाहरण उपलब्ध है। 1854 में कलकत्ता से एक दैनिक प्रकाशित हुआ जिसका नाम था– 'समाचार सुधावर्षण'। 1868 तक अनेक हिंदी पत्र प्रकाशित होने लगे थे। यथा 'बरानस अखबार', 'मार्तण्ड', 'ज्ञानदीप', 'मालवा अखबार', ''जगद्दीपक भास्कर', 'सुधाकर', बुद्धिप्रकाश,'प्रजा हितैषी' और 'कविवचन सुधा' आदि। 'कविवचन सुधा' का संपादन भारतेंदू हरिश्चंद्रर किया करते थे। 'सरस्वती ' को 20वीं शताब्दी का अत्यधिक महत्वपूर्ण पत्रिका माना जाता है, जो 1900 में प्रारंभ हुई। उन दिनों यह पत्रिका पं0 महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा संपादित की जाती थी।

हिंदी पत्रकारिता के जन्म के साथ ही साहित्यिक पत्रकारिता का विकास होने लगा। पांरभ में पत्रों की भाषा शिथिल थी, उसमें स्थानीय पुट भी रहता था। वर्तनी में एकरूपता नहीं थी। व्याकरण संबंधी भूलें भी होती थीं। हिंदी पत्र–पत्रिकाओं के प्रारंभिक संपादकों, बाल मुकुंद गुप्त, महावीर प्रसाद द्विवेदी, दुर्गाप्रसाद मिश्र, मदनमोहन मालवीय, बाबूराव विष्णु पराड़कर, अंबिकाप्रसाद बाजपेयी और लक्ष्मीनारायण गंदे ने इन कमियों को दूर करने और हिंदी गद्य को परिमार्जित करने में उल्लेलखनीय योगदान दिया।

इस संबंध में 1852 में आगरा से 'बुद्धिप्रकाश' का प्रकाशन महत्वपूर्ण है। इसमें सभी विषयों के लेख रहते थे। भारतेंदू हरिश्चंद्र ने 'कविवचन सुधा', 'हरिश्चन्द्र मैगजीन ' और 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' का प्रकाशन करके साहित्यिक पत्रिकाओं के प्रकाशन के लिए उपयुक्त आधार तैयार कर दिया था। 'सरस्वती' का प्रकाशन हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में युगांतकारी घटना थी। इसका प्रकाशन सन् 1900 में काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने शुरू किया । बाद में इसके प्रकाशन का भार इंडियन नेशनल प्रेस, इलाहाबाद को सौंप दिया गया। 1903 में आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' का संपादन भार स्वीकार किया। द्विवेदीजी ने अपने जीवनकाल में 'सरस्वती' को हिंदी की अग्रणी साहित्यिक पत्रिका बना दिया।

द्विवेदीजी ने साहित्यिक पत्रकारिता के लिए कुछ नियम बनाए। वह समय की पाबंदी अथवा पत्रिका के नियमित समय पर प्रकाशन को अत्यधिक महत्व देते थे। वह पत्रिका के संचालकों को विश्वास मे ंलेना, स्वतंत्रता एवं निष्पक्षता से विचार प्रकट करना, लेखकों को कुछ पारिश्रमिक देना, पाठकों को नई जानकारी और नई रचनाएं प्रदान करना भी आवश्यक समझते थे। वह पाठकों के हानि–लाभ, उनकी रूचि को समुचित महत्व देते थे। द्विवेदीजी ने अपने मार्गदर्शन में हिंदी कवियों, लेखकों और समीक्षकों की एक पूरी पीढ़ी तैयार की। द्विवेदीजी सरल सुबोध भाषा के पक्षधर थे। बाबू विष्णु पराड़कर के अनुसार 'सरस्वती' का प्रत्येक अंक अपने आपमें पूर्णता लिये होता था...... उसका प्रत्येक अंक संपादक के व्यक्तित्व की घोषणा करता था। सरस्वती के बाद हिंदी में अनेक पत्र निकले। इसमें 'चांद' (प्रयाग) 'माधुरी' (लखनऊ), 'सुधा' (जबलपुर), 'हिमालय' (पटना), 'शिक्षा' (पटना), और 'हंस' (इलाहाबाद), पत्रिकाएं सामयिक राजनीतिक घटनाचक्र पर तो सामग्री प्रकाशित करती ही थीं, साहित्यिक विषयों पर भी विद्वतापूर्ण लेख प्रकाशित करती थीं। 'चांद' की फांसी अंक, 'सुधा ' का साहित्यिक अंक, 'हंस' का आत्मकथा अंक, काशी अंक और प्रेमचंद अंक जनता में अत्यंत लोकप्रिय हुए। कहानी लेखक और उपन्यासकार प्रेमचंद ने सात वर्षों तक 'माधुरी' का संपादन किया, 'हंस' के प्रकाशन–संपादक भी प्रेमचंद थे। कुछ समय तक 'सुधा' का संपादन दुलारेलाल भार्गव ने, फिर रूपनारायण पांडे ने किया।

बीस के दशक के तीसरे वर्ष कलकत्ता से हास्य व्यंग्य से भरपूर 'मतवाला' का प्रकाशन शुरू हुआ। इसमें सभी तत्कालीन हिंदी लेखकों की रचनाएं, उनके जीवन परिचय, कविताएं और समालोचना छपती थी। हिंदी के मूर्धन्य कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला 'मतवाला' के प्रकाशन से घनिष्ठ रूप से जुड़े थे। 'मतवाला' अपने समय में खूब लोकप्रिय हुआ। इसके बारे में एक बार आचार्य किशोरीदास बाजपेयी ने लिखा–

'मतवाला कर डाला मुझको, मतवाला यह आला है
खूब निकाला इसको, यह तो सब पत्रों में आला है।'

रामानंद चटर्जी के प्रेरणा पर 1928 में माडर्न रिव्यू–प्रवासी प्रकाशन समूह ने 'विशाल भारत' का प्रकाशन शुरू किया। बनारसीदास चतुर्वेदी इसके संपादक थे। इस पत्र ने अपने विद्वतापूर्ण लेखों, सटीक टिप्पणियों, उत्कृष्ट चित्रों के कारण अपने लिए शीघ्र ही हिंदी पत्रों में विशेष स्थान बना लिया। इस पत्र को अनेक विशिष्ट लेखकों, विद्वानों और सार्वजनिक जीवन से जुड़े नेताओं का सहयोग प्राप्त था। 'विशाल भारत' में अनेक शोधपूर्ण लेख प्रकाशित हुए। स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ समय बाद यह यह पत्र बड़ी सज–धज से निकलता रहा।

हजारीप्रसाद द्विवेदी के संपादन में शांति निकेतन से 1942 में त्रैमासिक 'विश्व भारती' का प्रकाशन भी हिंदी साहित्यिक पत्रों के प्रकाशन में मील का पत्थर था। 'विश्व भारती' में अनेक विद्वानों के शोधपरक और चिंतन प्रधान निबंध प्रकाशित हुए। महात्मा गांधी ने ''विश्व भारती'' के प्रकाशन को साहसिक प्रयास कहा था। स्वतंत्रता के बाद उत्तर प्रदेश सरकार ने ''त्रिपथगाथा'' सांस्कृतिक पत्रिका निकाली। काशीनाथ उपाध्याय 'भ्रमर' ने बड़ी योग्यता से इस पत्रिका का संपादन किया। उत्तर प्रदेश सरकार का मुख पत्र 'उत्तर प्रदेश' अभी भी संग्रहणीय विशेषांक प्रकाशित करता है। 'ज्ञानोदय', 'कल्पना', 'नवनीत', 'कादम्बिनी' अन्य उल्लेखनीय साहित्यिक पत्रिकाएं हैं। नारायण दत्त जी के संपादन में मासिक 'नवनीत' ने हिंदी पत्रकारिता में नए आयाम प्रस्तुत किए। 'नवनीत' अब भारतीय विद्या भवन के मुख पत्र के रूप में निकलता है। यह अब अपने पूर्ण स्वरूप की छाया मात्र रह गया है। साप्ताहिक 'धर्मयुग' और 'हिन्दुस्तान' के प्रकाशन ने हिंदी पत्रकारिता के बड़े अभाव की पूर्ति की थी। 'धर्मयुग' के पहले संपादक जोशी बंधु, डॉ. हेमचंद्र जोशी और इलाचंद्र जोशी थे। उन्होंने बड़ी योग्यता से इसकी शुरूआत की बाद में धर्मवीर भारत ने अपने संपादन से इसकी कीर्ति में चार चांद लगाए। 'धर्मयुग', 'सारिका', 'पराग' और फिर 'संडे मेल ' में कन्हैयालाल नंदन जैसे साहित्यकार और संपादक ने सामाजिक, संस्कृतिक सरोकारों की रक्षा करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। मनोहर श्याम जोशी के संपादन में 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' ने बड़ी कीर्ति अर्जित की। उन्होंने विज्ञान और खेल लेखन को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया। यह निसंदेह दुर्भाग्य का विषय है कि ये पत्रिकाएं बंद हो गई। दूसरी तरफ 'आउटलुक साताहिक' ने न केवल सामाचार पत्रिका के रूप में प्रतिष्ठा प्रात की, साहित्यिक क्षेत्र में भी अपनी छाप छोड़ी हैं। साहित्यिक पत्रिकाओं में पहले 'हंस', 'गगननांचल' और 'समकालीन भारतीय साहित्य' उल्लेखनीय हैं।

हिंदी में शोध पत्रिकाओं की संख्या कम है। इसका मुख्य कारण यह है कि मूल शोध कार्य हिंदी माध्यम से नहीं किया जाता। जब हिंदी माध्यम से शोध ही नहीं किया जाएगा तो हिंदी मे ंशोध पत्रिकाएं कहां से निकलेंगी। फिर भी स्वतंत्रता के बाद इस दिशा में काफी काम हुआ है। इस समय 'विज्ञान परिषद अनुसांधन पत्रिका', 'आयुर्वेद अनुसंधान पत्रिका', 'प्राकृतिक और भौतिकीय विज्ञान शोध पत्रिका' सहित अनेक पत्रिकाएं निकल रही हैं। ये शोध करने वालों के लिए तो काफी उपयोगी हैं किंतु आम जनता इनसे विशेष लाभ नहीं उठा सकती।

आम जनता के लिए सरल और सुबोध भाषा–शैली में लिखी पत्रिकाएँ ही उपयोगी हो सकती हैं। हिंदी में इस तरह की अनेक साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक पत्रिकाएं निकलती हैं। इनमें 'विज्ञान प्रगति' और 'आविष्कार' प्रमुख है। 'विज्ञान प्रगति' की

लगभग एक लाख प्रतियां प्रकाशित की जाती हैं। इन दोनों पत्रिकाओं की साज–सज्जा, मुद्रण उच्च स्तर का है। अधिकांश हिंदी दैनिक और पत्र –पत्रिकाएं समय–समय पर विज्ञान विषयक सामग्री प्रकाशित करती है। हिंदी के कुछ पत्र विज्ञान, कृषि, पशुपालन, पर्यावरण और वानिकी पर नियमित स्तंभ भी प्रकाशित करते हैं। अनेक हिंदी दैनिक पत्र अपने रविवारीय परिशिष्ट में विज्ञान विषय पर रोचक सामग्री देते हैं। इस दिशा में ''नवभारत टाइम्स'' और ''हिन्दुस्तान'' ने उल्लेखनीय कार्य किया है।

देश में खेल पत्रकारिता की शुरूआत स्वतंत्रता के बाद हुई। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भारतीय पत्रकारिता का एकमात्र लक्ष्य अंग्रेजी शासन का विरोध करना और उसके विरूद्ध चेतना फैलाना था। उन दिनों भारतीय समाचार पत्रें के पास न तो खेलों के लिए पर्याप्त जगह थी और न उसकी इस में रूचि थी। फिर भी जब हॉकी के जादूगर ध्यानचंद ने ओलंपिक खेलों में स्वर्ण पदक जीतकर देश का सम्मान बढ़ाया, तो सारा देश खुशी से उन्मत हो गया। सभी समाचार पत्रें में यह समाचार सुर्खियों में छपा। इसी प्रकार जब लाला अमरनाथ ने क्रिकेट के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित किए तो सारे देश में खुशी की लहर दौड़ गई। समाचार पत्रें में खेल संबंधी समाचार प्रकाशित करने का सिलसिला कुछ देर से शुरू हुआ। 1951 में नई दिल्ली में पहले एशियाई खेल आयोजित किए गए। आयोजित खेलों के समाचार सभी समाचार पत्रें सहित हिंदी समाचार पत्रें में भी प्रकाशित हुए। तथापि, उस समय के हिंदी समाचार पत्रें को देखकर यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उन दिनों कोई भी समाचार पत्र खेल समाचारों को पूरा पृष्ठ नहीं देता था। धीरे–धीरे खेल समाचारों में हिंदी समाचार पत्रें की रूचि बढ़ने लगी। खेल समाचारों में जनता की रूचि बढ़ाने में क्रिकेट का महत्वपूर्ण योगदान है।

स्वतंत्रता के बाद 'युगछाया', 'फिल्म चित्र' और 'चित्रलेखा' का प्रकाशन शुरू किया गया। 1948 में कहानीकार, स्तंभ लेखक और फिल्म निर्देशक ख्वाजा अहमद अब्बास ने मुंबई से एक बड़ी अच्छी साहित्यिक फिल्मी पत्रिका 'सरगम' का प्रकाशन शुरू किया। किंतु उत्कृष्ट साम्रगी के बावजूद यह असमय में काल कवलित हो गई। पचास के दशक में 'कल्पना' और फिर 'माधुरी' 'शबनम' अनेक फिल्मी पत्रिकाएं प्रकाशित हुई किंतु इनमें से कोई भी अधिक समय तक प्रकाशित नहीं हो सकीं। इस बीच उर्दू 'शमा' ने हिंदी 'सुषमा' और 'चित्रा' ने हिंदी चित्रा का प्रकाशन शुरू किया। टाइम्स ऑफ इंडिया समूह ने 1963 में फिल्मी पत्रिका पहले 'सुचित्रा' और फिर 'माधुरी' का प्रकाशन करके हिंदी फिल्मी पत्रकारिता में एक नई शुरूआत की। 'माधुरी' ने अपने अंकों में वर्षों तक फिल्मों के संबंध में अत्यंत उच्चकोटि की सामग्री दी। हिंदी पाठकों ने भी इसे भरपूर समर्थन दिया लेकिन प्रकाशकों ने अंततः अनेक अन्य पत्र–पत्रिकाओं के साथ इसे बंद करने का निर्णय किया। 'माधुरी' के प्रकाशन को बंद करने से हिंदी फिल्म पत्रकारिता में जो अभाव पैदा हुआ था उसकी पूर्ति अभी तक नहीं की जा सकी है। इधर पिछले दशकों में फिल्म पत्रकारिता का पूरा स्वरूप बदल गया है। अब विवेचनात्मक और तथ्यपरक लेखों के बदले फिल्मी पत्रिकाओं में अफवाहों, अटकलों, किस्से–कहानियों, और यहां तक कि गप्पों को स्थान दिया जाने लगा है। कभी–कभी तो इन पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री सुरूचि और शालीनता की सीमाओं का खुल्लम–खुल्ला उल्लंघन करती है। इसकी शुरूआत अंग्रेजी फिल्म पत्र–पत्रिकाओं ने की लेकिन अब यह बीमारी सर्वत्र फैल गई है।

इस समय हिंदी में अनेक फिल्म पत्रिकाएं निकलती है। 'स्टारडस्ट' का हिंदी संस्करण लोकप्रिय रहा है। जबकि 'फिल्मफेयर' की सहयोगी 'माधुरी' बंद हो गई। 'फिल्मफेयर' अच्छा मुनाफा कमाकर दे रही है। 'स्क्रीन ' में भी फिल्मों के व्यावसायिक –व्यापारिक पक्ष पर अधिक सामग्री दी जाती है। फिल्म उद्योग के इतिहास, विकास ओर आवश्यकताओं पर शोधपरक, विवेचनात्मक और विश्लेषणात्मक सामग्री हीं दी जाती। फिल्में तेजी से मनोविनोद, मनोरंजन का मुख्य साधन बन रही है। हिंदी में बच्चों की पहली पत्रिका 1882 में 'बाल दर्पण' प्रकाशित हुई। यह अधिक समय तक नहीं चली। 1902 में इलाहाबाद से 'आर्य बालहितैषी' का प्रकाशन शुरू हुआ। वास्तव में हिंदी बाल पत्रकारिता का प्रारंभ 1917 में इलाहाबाद से 'बाल सखा' के प्रकाशन से शुरू हुआ। इसका प्रकाशन इंडियन प्रेस से होता था। इसके पहले संपादक बद्रीनाथ भट्ट थे। 'बाल सखा' का प्रकाशन 53 वर्षों तक हुआ। बच्चों की कई पीढ़ियाँ 'बाल सखा' की अभिन्न मित्र रहीं। तथापि इसकी प्रसार संख्या कभी दस हजार से ऊपर नहीं गई।

आचार्य राम लोचन शरण ने 1926 में पटना से 'बालक ' का प्रकाशन किया। पटना से ही इसी समय 'चुन्नू–मुन्नू' का प्रकाशन हुआ। पटना से बाल शिक्षा समिति ने 'किशोर' का प्रकाशन किया। इन सभी बाल पत्रों ने काफी समय तक बच्चों के लिए उपयोगी सामग्री प्रस्तुत की और बाल साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया।

स्वतंत्रता पूर्व 'वानर', 'मनमोहन' और 'शिशु' ने बच्चों के लिए अत्यंत रोचक एवं उच्चकोटि की सामग्री का प्रकाशन किया। 'वानर' का प्रकाशन इलाहाबाद से रामनरेश त्रिपाठी ने किया था।

स्वतंत्रता के बाद अनेक बाल–पत्रिकाओं का प्रकाशन शुरू हुआ। इनमें 'पराग', 'नंदन', 'चंपक', 'बाल भारती', और 'चंदा मामा' प्रमुख हैं। 'पराग' का प्रकाशन टाइम्स ऑफ इंडिया समूह ने 1958 में शुरू किया था। किसी समय यह बच्चों की सर्वोत्तम पत्रिका मानी जाती थी। 'नंदन' का प्रकाशन हिन्दुस्तान टाइम्स समूह ने 1964 में शुरू किया और अब तक चल रहा है। प्रकाशन विभाग की पत्रिका 'बाल भारती' पिछले चार–पांच दशकों से बच्चों का मनोविनोद और ज्ञानवर्धन कर रही है। 'बाल भारती' की गणना हिंदी की उत्कृष्ट बाल पत्रिकाओं में की जाती है। यह प्रकाशन विभाग की सबसे अधिक बिकने वाली पत्रिकाओं में से एक है। दिल्ली प्रेस से प्रकाशित 'चंपक' 1968 से निकल रहा है। पहले यह मासिक रूप में निकलता था, अब यह पाक्षिक रूप में निकलता है।

पत्रकारिता पाठक को बताती है कि उससे आस–पास इर्द–गिर्द क्या हो रहा है। पत्रकारिता एक उद्योग है, एक व्यवसाय है और इसी के साथ–साथ वह एक मिशन भी है। अन्य उद्योगों की तरह पत्रकारिता उद्योग भी लाभ कमाने का प्रयास करता है। लेकिन अन्य उद्योग की तरह उसका एकमात्र उद्देश्य लाभ कमाना नहीं है। पत्रकारिता के दो प्रमुख उद्देश्य है। पहला, सूचना देना यानी घटना की रिपोर्ट करना और दूसरा, खबर पर व्याख्या पेश करना और खबर पर आधारित राय बनाना। समाचारों की व्याख्या करने, उन पर टिप्पणी करने, उनकी समीक्षा करने का यह कार्य लेखों के जरिए किया जाता है। उपरोक्त विषय–वस्तु शोध के लिये सर्वथा उपयुक्त एवं नवीन है। इस शोध के द्वारा भारत में हिन्दी पत्रकारिता की निरंतरता एवं परिवर्तनशीलता को रेखांकित किया जा सकेगा।

साहित्यिक सर्वेक्षण

हिन्दी पत्रकारिता पर 19वीं एवं बीसबीं सदी में कई बहुमूल्य कार्य हुए हैं, जिसमें सामाजिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के विभिन्न तथ्यों को रेखांकित किया गया है। पूर्व अध्ययनों की समीक्षा के तहत विभिन्न आचार्यों द्वारा संपादित कार्यों का अवलोकन किया गया है। जिसमें संतोष भारतीय द्वारा रचित पुस्तक– पत्रकारिता : नया दौर, नये प्रतिमान, लखनऊ, 1988, कमल दीक्षित द्वारा रचित पुस्तक– महेश दर्पण इलाहाबाद, 1991, जितेन्द्र गुप्त, प्रियदर्शन एवं अरूण प्रकाश द्वारा रचित पुस्तक – पत्रकारिता में अनुवाद, लखनऊ, 1995, काशीनाथ गोविन्दराव जोगलेकर द्वारा रचित पुस्तक– संवाद समिति की पत्रकारिता, मेरठ, 1998, डॉ0 अर्जुन चाह्वान द्वारा रचित पुस्तक–मीडियाकालीन हिन्दी : स्वरूप और संभावनाएँ, राजस्थान, 2000, डॉ0 कृष्ण बिहारी मिश्र द्वारा रचित पुस्तक –हिन्दी पत्रकारिता, नागपुर, 2001, डॉ0 पृथ्वीनाथ पाण्डेय द्वारा रचित पुस्तक– पत्रकारिता :परिवेश और प्रवृत्तियाँ, इलाहाबाद, 2002, एस0 के0 दुबे द्वारा रचित पुस्तक– पत्रकारिता के नए आयाम, लखनऊ, 2002, राम विनायक सिंह द्वारा रचित पुस्तक –हिन्दी में उन्नत टिप्पण और सार लेखन, गोरखपुर, 2005 आदि शोधपरक पुस्तकों में हिन्दी पत्रकारिता से संबन्धित विभिन्न तथ्यों का अवलोकन प्रस्तुत किया गया है।

उद्देश्य

प्रस्तावित आलेख का महत्त्व एवं उसकी प्रासंगिकता और उद्देश्य निम्नलिखित तथ्यों पर आधारित हैः

इस अध्ययन के आधार पर हिन्दी पत्रकारिता के विभिन्न क्षेत्रों के विकास एवं भारतीय सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों पर पड़ने वाले प्रभावों के आयामों का तथ्यपरक विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन पद्धति

यह आलेख मुख्य रूप से वर्णन एवं विश्लेषण पर आधारित है। साथ ही ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति के आधार पर विभिन्न संस्थाओं, कार्यालयों एवं पुस्तकालयों से तथ्यों

का संकलन किया गया है। वर्तमान अध्ययन मुख्य रूप से द्वैतियक स्रोत पर ही आधारित है।

निष्कर्ष

आजादी के बाद समाचार पत्रों की नीति–रीति में एवं प्रकाशन विधि में बदलाव होते रहे। आज समाचार पत्र ऑफसेट पर रंगीन छपने लगे हैं। समाचार संकलन इंटरनेट से सुविधा जनक हो गया। राष्ट्रवाद के मुद्दे सिमट कर रह गए और आज पत्रकारिता पूंजीपतियों का आधिपत्य बढ़ता गया और सम्पादक की शक्तियां क्षीण हो गई। पत्रकारिता ने उद्योग का रूप ले लिया है। पत्रकारिता के क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति होने पर भी यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज हिंदी पत्रकारिता विकृतियों से घिर कर स्वार्थ सिद्धि और प्रचार का माध्यम बन गई है। कहने को पत्रकारिता लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है पर उसके समुचित विकास में आज भी अनेक बाधाएं हैं। मध्यम एवं लघु समाचार पत्रों को आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ रहा हैं। न तो इन्हें पर्याप्त सरकार और सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन मिलते हैं और निजी क्षेत्र भी बमुश्किल विज्ञापन देते हैं। आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद भी ये किसी प्रकार अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं। आवश्यकता हैं कि हिंदी पत्रकारिता के समुचित विकास के लिए बड़े समाचार पत्रों के साथ–साथ समस्त समाचार पत्रों का विकास हो और पर्याप्त आर्थिक सहायता उपलब्ध हो। समाज को भी इस ओर पहल करने की दरकार हैं।

संदर्भ स्रोत

1. संतोष भारतीय (1988) पत्रकारिताः नया दौर, नये प्रतिमान, लखनऊ।
2. कमल दीक्षित(1991), महेश दर्पण–समाचार संपादन, इलाहाबाद।
3. जितेन्द्र गुप्त, प्रियदर्शन, अरूण प्रकाश(1995) पत्रकारिता में अनुवाद, लखनऊ।
4. काशीनाथ गोविन्दराव जोगलेकर (1998)संवाद समिति की पत्रकारिता, मेरठ।
5. डॉ0 अर्जुन चाह्वान(2000)मीडियाकालीन हिन्दी : स्वरूप और संभावनाएँ, राजस्थान।
6. डॉ0 कृष्ण बिहारी मिश्र(2001)हिन्दी पत्रकारिता, नागपुर।
7. डॉ0 पृथ्वीनाथ पाण्डेय द्वारा रचित पुस्तक (2002)पत्रकारिता :परिवेश और प्रवृत्तियाँ, इलाहाबाद।
8. एस0 के0 दुबे(2002)पत्रकारिता के नए आयाम, लखनऊ।
9. राम विनायक सिंह(2005)हिन्दी में उन्नत टिप्पण और सार लेखन, गोरखपुर।